International Research Journal of Humanities, Language and Literature ISSN: (2394-1642)
Impact Factor 5.401 Volume 4, Issue 8, August 2017
Website-www.aarf.asia, Email : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

रामचरितमानस में वर्णित घटनाओं में वैज्ञानिकता

डॉ. शिवदयाल पटेल
सहायक प्राध्यापक हिंदी
शासकीय नवीन महाविद्यालय बाँकी मोगंरा, जिला- कोरबा, छत्तीसगढ़

प्रस्तावना

वर्तमान परिवेश को विज्ञान का युग कहा जाता है। आज विज्ञान ने इतनी प्रगति की है कि मनुष्य के जीवन शैली में आमूल चूल परिवर्तन आ गया है। साथ ही साथ सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक तथा नैतिकता के क्षेत्र में विविध प्रकार के परिवर्तन होते जा रहे है । आज के भौतिकवादी युग में हमारे दैनिक जीवन में बहुत सी वस्तुएँ जुड़ी हुई है। जिसमें रेडियो, टेलिफोन, टेलिविजन, कम्प्यूटर, इंटरनेट, भ्रमणध्वनी आदि आविष्कारों के रूप में हमें अनेक प्रकार की विलासता की वस्तुएं प्राप्त हुई हैं। विज्ञान के परिवेश में रहते हुए आज मनुष्य विज्ञानमयी बन गया है। वर्तमान युग में न जाने ऐसे कितने रहस्यपूर्ण विज्ञान छुपे हैं, जिनसे हम अभी तक अनजान हैं। वैज्ञानिकों एवं खोजकर्ताओं द्वारा नित नवीन नई-नई खोजें की जा रही हैं, वह प्राचीन समय से ही मौजूद थी, किन्तु आज ज्ञान, विज्ञान और तकनीकी के माध्यम से उपलब्धियाँ हासिल की। जिसमें कुछ खोजें ऐसी होती हैं जो मानव जाति के हित में होती है कुछ खोजें ऐसी भी होती है जो मानव जाति, प्रकृति एवं जीव-जन्तुओं के हित में नहीं होती। ऐसे कुछ अनजाने रहस्यों की करने का प्रयास किया जा रहा है। वह भक्ति कालिन कवियों की देन है। विज्ञान के आविर्भाव से पूर्व समाज पर भक्ति और ज्ञान का प्रभाव था। इसलिए आरम्भ के वैज्ञानिकों में हम शुद्ध विज्ञान के दर्शन नहीं करते थे। किन्तु आज ज्ञान के साथ विज्ञान ने भी इतनी प्रगति की है कि सारे काम-काज टेक्नोलॉजी के माध्यम से हो रहा है। इस के सामने प्राचीन विज्ञान फीका होता गया। ऐसी स्थिति में भारतीय कवियों की रचनाओं में विज्ञान के कई बिन्दु सामने आये हैं, इसकी जाँच होनी आवश्यक है। सामाजिक चिन्तन के साथ वैज्ञानिक ज्ञान की जानकारी रामचरितमानस में उपलब्ध है। जिसे हम सातों कांड में देखेंगे-

1. बाल कांड की घटनाओं में वैज्ञानिकता

बालकाण्ड की कथा का प्रारंभ मंगलाचरण शिव एवं पार्वती, गुरु ब्राह्मण, संत, खल, राम रूप में जीव मात्र की वंदना, तुलसी की भक्तिमयी कविता की महिमा मानस की रचना तिथि तथा उनका विवाह, नारद का अभिमान, मनु सतरूपा का तप, भानुप्रताप की कथा, रामकथा, राम का जन्म, विश्वामित्र का चक्रवर्ती सम्राट दशरथ से राम लक्ष्मण को मांग ले जाना, ताड़का वध, धनुष भंग और राम को विवाह के पश्चात् अयोध्या लौट जाने तक के घटनाक्रम का सविस्तार वर्णन किया गया है। इस में कहीं न कहीं विज्ञान का समावेश हुआ है।

© Associated Asia Research Foundation (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

आधुनिक युग में वैज्ञानिक अविष्कार ने मानव जीवन को आसान बना दिया है। वैज्ञानिकों के द्वारा पूर्वानुमान लगाकर अच्छी बारिस की संभावना, भूकंप, या समुद्री तूफान से भयंकर तूफान की आशंका या उनसे होने वाले तबाही के पूर्वानुमान की जानकारी आकाशवाणी के माध्यम प्राप्त हो जाती है।

तुलसीदास जी ने रामचरितमानस में वर्षों पहले इनका उल्लेख कर दिया है। तप के कारण उमा का शरीर अत्यंत क्षीण हो गया, उसे देखकर आकाश में गंभीर ब्रह्मवाणी हुई कि उसकी कामना पूर्ण होगी और शिवजी पति रूप में प्राप्त होंगे-

“देखि उमहि तप खीन सरीरा ।

ब्रह्मगिरा भै गगन गभीरा ।।

भयउ मनोरथ सुफल तव सुनु गिरिराजकुमारि ।

परिहरु दुसह कलेस सब अब मिलिहहिं त्रिपुरारि ।। "

रावण के त्रास और अत्याचार से देव लोक और पृथ्वी लोक में हाहाकार मचा हुआ था। सभी अपने जीवन की सुरक्षा के लिए त्राहिमाम त्राहिमाम पुकार रहे थे। देवता और पृथ्वी को भयभीत जानकर और उनके स्नेहयुक्त वचन सुनकर शोक और सन्देह को हरने वाली गम्भीर आकाशवाणी हुई ।

"जानि सभय सुर भूमि सुनि बचन समेत सनेह ।

गगन गिरा गंभीर भइ हरनि सोक संदेह । । ”

“जनि डरपहु मुनि सिद्ध सुरेसा । तुम्हहि लागि धरिहउँ नर बेसा ।।

अंसन्ह सहित मनुज अवतारा। लेहउँ दिनकर बंस उदारा ॥ "2

अर्थात् हे मुनि, सिद्ध और देवताओं के स्वामियों ! डरो मत। तुम्हारे लिये मैं मनुष्य का रूप धारण करूँगा और पवित्र सूर्य वंश में अंशों सहित मनुष्य का अवतार लूँगा

प्राचीन काल में अयोध्या नगरी में राजा दशरथ राज्य करते थे । उनकी तीन रानियाँ थी, जिसका नाम क्रमशः कौशल्या, सुमित्रा एवं कैकेयी था। तीनों रानियों में से किसी को पुत्र उत्पन्न न होने के कारण राजा को बहुत चिन्तित जानकर गुरु वशिष्ट श्रृंगी ऋषि के द्वारा राजा की इच्छा पूर्ण करने के हेतु पुत्र प्राप्ति के लिए यज्ञ कराया । जब श्रृंगी ऋषिमुनि ने भक्तिसह आहुतियाँ डालीं तो अग्निदेव अपने हाथों में प्रसाद लेकर प्रकट हुए और दशरथ को सम्बोधन करते हुए बोले- "वशिष्टजी के द्वारा तुम्हारा सब काम सिद्ध हो जायेगा । हे राजन! तुम इस प्रसाद को ले जाकर इच्छानुसार रानियों में बाँट दो।"

“जो बसिष्ठ कुछ हृदयँ बिचारा ।

सकल काजु भा सिद्ध तुम्हारा ॥

यह हबि बाँटि देहु नृप जाई ।

जथा जोग जेहि भाग बनाई ॥

ये शब्द कहकर अग्निदेव अन्तर्ध्यान हो गये। राजा हर्षित होकर राज महल में पहुँचे और अपनी तीनों रानियों को बुलाया। राजा ने प्रसाद का आधा हिस्सा कौशल्या को दिया और शेष आधे के दो भाग किये। उनमें से एक भाग राजा ने कैकेयी को दिया और शेष के फिर दो भाग करके कौशल्या और कैकेयी की अनुमति से सुमित्रा को दे दिया-

“तबहिं रायँ प्रिय नारि बोलाई। कौसल्यादि तहाँ चलि आई ।।

अर्ध भाग कौसल्यहि दीन्हा। उभय भाग आधे कर कीन्हा ।।
कैकेई कहँ नृप सो दयऊ। रह्यो सो उभय भाग पुनि भयऊ।।
कौसल्या कैकेई हाथ धरि । दीन्ह सुमित्रहि मन प्रसन्न करि ।। 4

इस प्रकार तीनों रानियाँ गर्भवती हो गयी उन्हें परम सुख प्राप्त हुआ। यह पुत्रेष्टि यज्ञ के प्रसाद एक वैज्ञानिक प्रक्रिया का परिणाम है। यह उपाय आज भी अपनाएँ जा रहे है। लेकिन भेद इतना है एक आयुर्वेदिक विज्ञान और दूसरा चिकित्सा विज्ञान द्वारा। पहले तो मंत्र के माध्यम से यज्ञ कराया फिर श्रृंगी ऋषि द्वारा किसी विशिष्ट विधि से ऐसी औषधि युक्त खीर बनी होगी, जिससे गर्भधारण संभव हो सका होगा। यहाँ एक उल्लेखनीय है कि इस औषधि युक्त खीर की एक खुराक खाने से एक पुत्र और दो खुराक खाने से दो पुत्रों की प्राप्ति हुई। सुमित्रा जी ने दो खुराकें खाई थीं। यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है के यह आधुनिक युग का आयुर्वेद विज्ञान है। मात्र आयुर्वेद विज्ञान ही नहीं आज चिकित्सा विज्ञान भी इतना ही प्रगतिशील रहा है। वह गर्भ धारण की प्रक्रिया का प्रचलन सामान्य होता जा रहा है। प्रथम मंत्रशक्ति को आधार माना गया था आज वैज्ञानिक प्रक्रिया को ।

खगोल शास्त्र और ग्रह - विज्ञान

खगोल शास्त्र और ग्रह - विज्ञान भी खूब विकसित थे ।इस में ज्योतिषशास्त्र का संपूर्ण ज्ञान होता है। राम जन्म के समय ग्रहों और नक्षत्रों का उल्लेख ज्योतिष शास्त्र और काल गणना की ओर संकेत करता है। कार्यारंभ में ग्रह और नक्षत्रों की स्थिति देखी जाती थी। राम जन्म के समय ग्रहों की स्थिति इस प्रकार थी-

“नौमी तिथि मधु मास पुनीता। सुकल पच्छ अभिजित हरिप्रीता ।
मध्यदिवस अति सीत न घामा। पावन काल लोक बिश्रामा।।" 5

पवित्र चैत्र का महीना था, नवमी तिथि थी, शुक्लपक्ष और भगवान् का प्रिय अभिजित मुहूर्त था। दोपहर का समय था, न अधिक सरदी थी न अधिक गरमी। यह पवित्र समय सब लोगों को शान्ति प्रदान करनेवाला था। इस समय में राम का जन्म हुआ। श्री रामचन्द्र जी की जन्म पत्रिका में लग्न में कर्क बृहस्पति और चन्द्र विद्यमान हैं। यह गजकेशरी योग कहलाता है।

उपर्युक्त घटनाओं के अतिरिक्त भी बालकाण्ड में कई घटनाएँ ऐसी है जो विज्ञान के साथ संबंध रखती हैं। जैसे- राम जन्म के सुभ अवसर पर सभी देवताओं के द्वारा भगवान का बालरूप निहारने के लिए विमान सजा-सजाकर चले आना और पुष्प की वर्षा करना, खुशी के कुछ दिन बीत जाने के बाद नामकरण, यज्ञ की रक्षा के लिए विश्वामित्र के साथ, राम और लक्ष्मण को भेजना, राजा जनक की पुत्री के 'स्वयंवर' प्रसंग में भाग लेना और राम सहित सभी भाइयों का विवाह आदि सभी घटित घटनाओं में विज्ञान का ज्ञान हमें होता है ।

2. आयोध्या कांड की घटनाओं में वैज्ञानिकता

'रामचरितमानस' का मुख्य काण्ड अयोध्याकाण्ड हैं। इसे साहित्य की 'नीव' कहा गया है। इस काण्ड में राज्याभिषेक की तैयारी से लेकर चित्रकूट में भरत राम मिलन के बाद नन्दिग्राम में भरत तक की कथावस्तु जुड़े है। राज्याभिषेक की तैयारी, देवताओं के षडयंत्र के प्रभाव से कैकेयी का वरदान माँगनना, अयोध्या के राजमहल तथा पुरवासियों की पीड़ा, सीता लक्ष्मण सहित राम का वन गमन, श्रृंगवेरपुर में केवट द्वारा राम का आतिथ्य, भारद्वाज के आश्रम में राम, वाल्मीकि के आश्रम में राम की कथा समाहित है।

सुमन्त का अयोध्या में आगमन और दशरथ की दुःखद मृत्यु, ननिहाल से भरत का आगमन, राम को मनाने के लिए भरत का वन में जाना, चित्रकूट में भरत-राम मिलन।

उपर्युक्त प्रसंगों के आधार पर हमें कहीं न कहीं आधुनिक विज्ञान का दर्शन होता है।

राम के विरह में राजा दशरथ की मृत्यु होती है तब सब रानियाँ शोक के मारे व्याकुल होकर रो रही हैं। वे राजा के रूप, शील, बल और तेज का बखान कर करके अनेक प्रकार से विलाप कर रही हैं और बार-बार धरती पर गिर पड़ती हैं। दास-दासीगण व्याकुल होकर विलाप कर रहे हैं और नगरनिवासी घर-घर रो रहे हैं। सब कैकेयी को गालियाँ देते हैं, जिसने संसार भर को बिना नेत्र का (अंधा) कर दिया। इस प्रकार विलाप करते रात बीत गयी। प्रातः काल सब बड़े-बड़े ज्ञानी मुनि आये। तब वशिष्ठ मुनि ने समय के अनुकूल अनेक इतिहास कहकर अपने मनोवैज्ञानिक के प्रकाश से सब का शोक दूर किया-

“तब बसिष्ठ मुनि समय सम कहि अनेक इतिहास ।
सोक नेवारेउ सबहि कर निज बिग्यान प्रकास ।। 6

यहाँ गुरु वशिष्ठ का कितना प्रभाव है कि मनोवैज्ञानिक के माध्यम से सबका शोक दूर कर देते हैं। आज इतनी प्रगति के बाद भी किसी के शोक और दुखनिवारण का दावा नहीं किया जा सकता। इसी प्रकार राम के वन गमन पर राम के विरह में राजा दशरथ तड़पते रहे और तब उन्हें अचनाक अन्धे तपस्वी के शाप की बात याद आई। उस कथा को उन्होंने कौशल्या को बताया और इसके बाद अपने प्राणों का त्याग कर देते हैं। राजा दशरथ की मृत्यु के समय भरत और शत्रुध्न ननिहाल में थे। भरत और शत्रुघ्न को बुलाने के लिए दूत भेज दिए गए। तब तक राजा दशरथ के शव को सुरक्षित रखना आवश्यक
था। गुरु वशिष्ठ जी ने वैज्ञानिक आधार पर इस शव को सुरक्षित रखने का प्रयत्न किया ।

राजा दशरथ के मृत शरीर को निम्नानुसार वैज्ञानिक प्रक्रिया से सुरक्षित रखा जाता है

“तेल नावँ भरि नृप तनु राखा । दूत बोलाइ बहुरि अस भाषा ।।
धावहु बेगि भरत पहिं जाहू । नृप सुधि कतहुँ कहहु जनि काहू ।। ""

तुलसीदास जी ने बता दिया है कि शव को सुरक्षित रखने का विज्ञान प्राचीन काल से ही चला आया है। बड़े नेताओं के शव को सुरक्षित रखने की प्रक्रिया रूस में तेजी से उभरी। पुराने जमाने में मिश्र (इजिप्स) में यह आम प्रचलन था। आधुनिक वैज्ञानिक रोबर्ट एटिन्जनर ने 'कायोनिक्स' को जन्म दिया। 'कायोनिक्स' याने कि भविष्य में सजीव करने की आशा में मृतदेह को सुरक्षित रखने का आधुनिक विज्ञान। ‘कायोनिक्स' एक ऐसा साधन है, जिस में मृतदेहों को अतिशय कुल वातावरण
में रखा जाता है। यह साधन आज शव को सुरक्षित रखने का एक विज्ञान ही है।

उपर्युक्त आधार पर हम कह सकते है कि मृतक को कई दिनों तक सुरक्षित रखा जा सके ऐसी व्यवस्था आयुर्वेदिक पदार्थों के माध्यम से उस समय भी थी। लेकिन परिवर्तन मात्र आकार प्रकार में होता है।

3. अरण्य कांड की घटनाओं में वैज्ञानिकता

अरण्यकाण्ड में भी अत्रि मिलन, विराध-वध, राक्षस-वध की प्रतिज्ञा, पंचवटी निवास, शूर्पणखा की कथा, खर-दूषण का वध, मारीच प्रसंग, सीता हरण, कबन्ध वध, शबरी पर कृपा आदि का सरस वर्णन है।

चित्रकूट में जब राम और सीता निवास कर रहे थे। तब एक बार श्रीराम जी ने अपने हाथों से भाँति-भाँति के गहने बनाये और सुन्दर स्फटिकशिला पर बैठे हुए प्रभु ने आदर के साथ वे गहने सीता जी को पहनाये। सीता जी का यह रूप दिव्य था। इन्द्र के पुत्र जयन्त को रावण ने उकसाया और वह रघुपति राम के बल को आजमाने को तैयार हो गया-

“सुरपति सुति धरि बायस बेषा ।
सठ चाहत रघुपति बल देखा ।। 8

वह मूढ मन्द बुद्धि कारण से (भगवान के बल की परीक्षा करने के लिए) बना हुआ कौआ सीता जी के चरणों में चोंच मारकर भागा। जब रक्त बह चला, तब श्री रघुनाथ जी ने सीता के पैर से रूधिर की धार बहती

बहती हुई देखी तो उन्होंने कुश को लेकर ब्रह्मास्त्र के रूप में उसे अपने धनुष पर धारण कर चलाया-

" प्रेरित मंत्र ब्रह्मसर धावा ।
चला भाजि बायस भव पाया ।। "

मंत्र से प्रेरित होकर वह ब्रह्मबाण दौड़ा। कौआ भयभीत होकर भाग चला।HतGायह ब्रह्मसर आज के युग में 'हीट सेकींग मिसाइल' का एक विशिष्ट उदाहरण है। यह मिसाइल जयन्त का पीछा करता रहा है। उसे कोई सहारा नहीं देने पाता है। वह असली रूप धारण करके पिता इन्द्र के पास गया, पर श्रीरामजी का विरोधी जानकर इन्द्र ने इसको नहीं रखा। तब वह निराश हो गया, उसके मन में भय उत्पन्न हो गयाय जैसे दुर्वासा ऋषि को चक्र से भय हुआ था। इसी प्रकार जयन्त के पीछे गाइडेड मिसाइल की तरह श्रीराम का ब्रह्मसर चलता रहा। आज के विज्ञान ने मिसाइलों का जो निर्माण किया उसके बीज हम ‘रामचरितमानस' में पा सकते हैं। किसी निश्चित लक्ष्य के प्रति कुश का ब्रह्मास्त्र के रूप में छोड़ना अपने आप
में उन्नत विज्ञान और तकनीकी का उदाहरण है।

आकाश मार्गी रथ

'रामचरितमानस' में पुष्पक विमान के अतिरिक्त रथ भी हवा में उड़ने वाले थे। रावण जब सीताहरण करने के लिए आया तो उसका रथ आकाशमार्गी था-

"क्रोधवंत तब रावन लीन्हिसि रथ बैठाइ ।
चला गगनपथ आतुर भयँ रथ हाँकि न जाइ। 10

उक्त दोहे के माध्यम से हम कह सकते हैं कि प्राचीन युग में आकाशमार्गी रथ का उल्लेख हुआ है जो रावण के पास था। इसका उल्लेख तुलसीदास ने किया। आज वैज्ञानिकों ने यह सिद्ध करके विमान, हेलीकप्टर, राकेट आदि को बनाया है वह विकसित तकनीकी का ही परिणाम है

4. किष्किंधा कांड की घटनाओं में वैज्ञानिकता

किष्किन्धाकाण्ड में राम के द्वारा सीता का अन्वेषण, उनका विरही रूप, शबरी भक्ति, सुग्रीव मैत्री, हनुमान प्रसंग, बालिवध, सीता की खोज में बन्दरों का तत्पर होना आदि इस काण्ड के प्रमुख प्रसंग हैं। जिसमें वैज्ञानिकता का प्रमाण देखा जा सकता है।

5. सुन्दरकाण्ड की घटनाओं में वैज्ञानिकता

सुन्दरकाण्ड में हनुमान का लंका में प्रवेश, सीता से भेंट, अक्षय कुमार का वध, हनुमान रावण संवाद, लंकादहन, राम-हनुमान संवाद, राम का वानर सेना के साथ प्रस्थान, मन्दोदरी-रावण संवाद, विभीषण की शरणागति, रावण के मंत्र का रावण को समझाना, राम का समुद्र पर क्रोध आदि का चित्रण है।

उपर्युक्त समग्र प्रसंगों के आधार पर संपूर्ण कथा जुड़ी हुई है। इस में कुछ प्रमुख वैज्ञानिक घटनाएँ हैं, इसका उल्लेख करना समीचीन होगा।

छायाग्राहिणी पद्धति (राडार पद्धति)

वर्तमान युग में यदि शत्रु आकाश मार्ग से देश की सीमा को पार करना चाहे तो अद्भुत क्षमता संपन्न राडार पद्धति से उसका निरीक्षण किया जा सकता है। रावण ने अपने युग में ऐसी कई तकनीकी विकसित कर ली थीं। जिसका उल्लेख निम्नलिखित हैं-

"निसिचर एक सिंधु महुँ रहई। करि माया नभु के खग गहई ।।
जीव जंतु जे गगन उड़ाही। जल बिलोकि तिन्ह कै परिछाहीं।।"
गहड़ छा सक सो न उड़ाई। एहि बिधि सदा गगनचर खाई । । "

छायाग्राहिणी पद्धति से शत्रु को अंतरिक्ष में ही उड़ने से रोक कर गिरा देना और उसे समाप्त कर देना रावण की सुरक्षा का सजग बिन्दु दिखाई देता है। रावण ने सुरक्षा व्यवस्था को इतना चुस्त किया था कि विज्ञान को भी पीछे पड़ जाना पड़ा। सीता की खोज में हनुमान जी रात्रि के समय लंकापुरी में घुसना चाहते हैं, किन्तु इतना सतर्क है कि वे मच्छर का रूप धारण कर लेते हैं, और लंका में प्रवेश करना चाहते हैं। फिर भी लंकिनी प्रवेश नहीं करने देती।

तुलसीदास जी के शब्दों में

" मसक समान रूप कपि धरी । लंकहि चलेउ सुमिरि नरहरी । ।
नाम लंकिनी एक निसिचरी । सो कह चलेसि मोहि निंदरी । । 12

वहाँ की व्यवस्था इतनी चुस्त-दुरुस्त थी कि मच्छर भी बिना पूछताछ के देश में प्रवेश नहीं कर सकता। स्वयं लंकिनी राक्षसी हनुमान को मसक रूप में भी भीतर प्रवेश नहीं करने देती। इससे अधिक विकसित पद्धति और क्या होगी? यह अलग बात है कि हनुमान अपनी आध्यात्मिक शक्ति से प्रवेश कर लेते हैं। आशा की जा सकती है कि भविष्य में ऐसी तकनीक विकसित की जा सकेगी और तब हम कह सकेंगे कि पौराणिक युगों में भी ऐसा वर्णन हमें ग्रंथों में मिलता है, वह मात्र अकेली कल्पना नहीं थी ।

इसी प्रकार हनुमान अपना रूप बढ़ाते भी है और घटाते भी हैं।

जब सुरसा अपना आकार बढ़ा देती है तब हनुमान जी अपना आकार छोटा कर लेते हैं।

"जोजन भरि तेहिं बदनु पसारा । कपि तनु कीन्ह दुगुन बिस्तारा ।
सोरह जोजन मुख तेहिं ठयऊ। तुरंत पवन सुति बत्तिस भयऊ। । "13

इसी स्पर्धा में वे सुरसा को पराजित कर आगे बढ़ गए । आगे लंका में प्रवेश करते समय हनुमान मच्छर के रूप में लंकिनी के सामने प्रस्तुत हुए। रूप परिवर्तन करना आज के युग में फिलहाल चिकित्सकीय सहायता से हो रहा है, अतः इस घटना की प्रामाणिकता से इंकार नहीं किया जा सकता।

रामसेतु का निर्माण

आजकल रामसेतु पर काफी चर्चा हो रही है। अमरिका 'नासा' संस्था ने इसकी यथार्थता पर अपनी वैज्ञानिक मुहर लगाई है। वास्तव में नल और नील दो दक्ष इंजिनियरों की कुशलता से सेतु योजना बनाई गई और हजारों वानरी हाथों से यह संसार का सबसे पुराना सेतु बनाया गया-

“नाथ नील नल कपि द्वौ भाई । लरिकाई रिषि आसिष पाई ॥

तिन्ह के परस किएँ गिरि भारे । तरिहहिं जलधि प्रताप तम्हारे ॥14

स्वयं सागर ने राम से अनुरोध किया कि नील और नल दोनों श्रेष्ठ इंजिनियर विश्वकर्मा के पुत्र हैं, ये सेतु बाँधने में निपुण है। यहाँ सेतु बाँधने की निपुणता के द्वारा विज्ञान की इस सिद्धि की ओर तुलसीदास जी ने संकेत किया है। यहाँ तक कहा गया है कि यह सेतु जो सौ योजन लम्बा और दस योजन चौड़ा था, मात्र पाँच दिनों में बना लिया गया था। वाल्मीकि रामायण में लिखा है कि-पहले दिन 14 योजन, दूसरे दिन 20 योजन तथा तीसरे, चौथे और पाँचवे दिन 21, 22 और 23 योजन की लम्बाई पूरी की गई थी। नल और नील ने आधुनिक युग के इंजिनियर का काम किया था। नल और नील के नेतृत्व में यह एक ऐसा पुल बना, जिस पर सारी रामसेना पार उतरी।

आज भी यह सेतु चर्चा का विषय बना हुआ है ।

5. लंकाकाण्ड की घटनाओं में वैज्ञानिकता

लंकाकाण्ड में समुद्र का बाँधना, अंगद रावण संवाद, लक्ष्मण मूर्च्छा, राम का विलाप, कुंभकर्ण और मेघनाद का वध, राम-रावण युद्ध रावण वध, सीता की अग्नि परीक्षा, राम का अयोध्या प्रस्थान आदि घटनाओं का चित्रण है। इसमें युद्ध का बड़ा ही सजीव एवं भयानक चित्रण हुआ है। उपयुक्त समग्र घटनाओं के आधार पर संपूर्ण कथा जुड़ी हुई है। इस घटनाओं में से कुछ घटनाएँ आधुनिक विज्ञान पर आधारित हैं वह निम्नलिखत हैं-

चिकित्सा विज्ञान

पुष्पक विमान

चिकित्सा विज्ञान

लंका के युद्ध में जब लक्ष्मण को मेघनाद द्वारा प्रक्षिप्त शक्ति नामक प्रक्षेपास्त्र लगने से घायल होकर अचेत हो गए थे और उनके प्राण बचाने के लिए वैद्य सुषेण की सलाह पर हनुमान जी संजीवनी बूटी लेने गए थे। उस समय चूँकि उनको केवल स्थान विशेष बताया था पर उन्हें बूटी की पहचान नहीं थी अतः वे अपनी समझ से उस पर्वत का वह शिखर ही उखाड़कर ले आए

"मुरुछा भई सक्ति के लागे। तब चलि गयउ निकट भय त्यागें ।।

जामवंत कह बैद सुषेना। लंकाँ रहड़ को पठई लेना ।।

धरि लघु रूप गयउ हनुमंता। आनेउ भवन समेत तुरंता ।।

राम पदारबिंद सिर नायउ आइ सुषेन ।

कहा नाम गिरि औषधि जाहु पवनसुत लेन ॥

देखा सैल न औषध चीन्हा । सहसा कपि उपाहि गिरि लीन्हा ।।

गहि गिरि निसि नभ धावल भयऊ। अवधपुरी ऊपर कपि गयऊ।

आइ गयउ हनुमान जिमि करना महँ बीर रस ।

हरषि राम भेटेउ हनुमाना। अति कृतग्य प्रभु परम सुजाना ।।
तुरंत बैद तब कीन्हि उपाई । उठि बैठे लछिमन हरषाई ।। 15

यहाँ वाल्मीकि रामायण में लंकाकाण्ड में वर्णित चिकित्सकीय ज्ञान के अंश देना उस समय उपलब्ध चिकिस्ता विज्ञान को प्रमाणित करता है । सुषेण कहते हैं आपके भाई लक्ष्मण मरे नहीं है। देखिए उनके मुख की आकृति अभी बिगड़ी नहीं है और इनके चेहरे पर कालापन ही आया है। इनका मुख प्रसन्न एवं कान्तिमना दिखाई दे रहा है। इनके हाथों की हथेलियाँ कमल जैसी कोमल हैं, आँखें भी बहुत साफ है। प्रजानाथ! मरे हुए प्राणियों का ऐसा रूप नहीं देखा जाता है। शत्रुओं का दमन करनेवाले वीर आप विचार न करें। इनके शरीर में प्राण है। ये सो गए है। इनका शरीर शिथिल होकर भूतल पर पड़ा है। साँस चल रही है और हृदय बारंबार कम्पित हो रहा है उनकी गति बन्द नहीं हुई है। यह लक्ष्मण के जीवित होने की सूचना दे रहा है। सौम्य ! तुम शीघ्र ही संजीवनी पर्वत पर जाओ और दक्षिण शिखर पर उगी हुई

“विशल्यकरणी - (शरीर में घुसी हुई बाण आदि को निकालकर घाव भरने और पीड़ा दूर करनेवाली)
सावण्यकरणी - (शरीर में पहले जैसी रंगत लानेवाली)
संजीवकरणी- (मूर्च्छा दूर कर चेतना प्रदान करनेवाली)
संधानी - (टूटी हुई हड्डियों को जोड़नेवाली)"
नाम की प्रसिद्ध महा औषधियों को यहाँ ले आओ । इन औषधियों से लक्ष्मण के जीवन की रक्षा होगी।

उक्त चारों औषधियों का उल्लेख रामायण में मिलता है। 'रामचरितमानस' में मात्र 'औषधियों का नाम लेता है और ले आओ इतना ही उल्लेख मिलता है यह हुआ आधुनिक चिकित्सा विज्ञान। आज का विज्ञान इस के सामने सामान्य लगता है इतनी टेकनोलोजी के बाद भी ।

पुष्पक विमान

‘रामचरितमानस' में विमानों का उल्लेख कई स्थानों पर हुआ है पर सर्वाधिक ख्याति पुष्पक विमान की है । यह विमान कुबेर के पास था जिसे रावण छीनकर ले आया था। श्रीराम ने लंका विजय के बाद अयोध्या जाते समय इस विमान का उल्लेख मिलता है-

“चलत बिमान कोलाहल होई । जय रघुबीर कहइ सबु कोई ।
रूचिर बिमानु चलेउ अति आतुर। कीन्ही सुमन बुष्टि हरषे सुर ।। 16

इस विमान में श्रीरामचंद्र जी ने सीता, लक्ष्मण, हनुमान, विभीषण, सुग्रीव, अंगद, जामवन्त तथा अन्य सहयोगियों के साथ लंका से अयोध्या की यात्रा की थी। इस विमान की विशेषताओं में इसका स्वचालित होना, इसका आकार बढ़ाया या घटाया जा सकना, इसका किसी भी ऊँचाई पर उड़ सकना तथा किसी भी स्थल पर उतर सकना ।

आज जब वायुयान खूब प्रयोग में आने लगे हैं तो पुष्पक तथा अन्य पुराने वर्णनों में आए विमानों को लोग केवल कल्पना की उड़ान अब नहीं मानते । इससे सिद्ध होता है कि रावण के पास पुष्पक के अतिरिक्त भी आकाशमार्ग से आवागमन की सुविधा और तकनीक उपलब्ध थी । आज विमानों ने यह सिद्ध कर दिया है कि आकाशमार्ग से भी आना-जाना कठिन नहीं है।

6. उत्तरकाण्ड की घटनाओं में वैज्ञानिकता

उत्तरकाण्ड में भरत - हनुमान मिलन, राम-भरत मिलाप, राम का राज्याभिषेक, गरुड़-भुशुण्डि संवाद, ज्ञान भक्ति निरुपण, रामायण महात्म्य आदि का वर्णन है। इस प्रसंग के साथ संपूर्ण कथावस्तु जुड़ी है। इस प्रसंग में कई घटनाएँ ऐसी है जिस का विज्ञान के साथ संबंध है। यह घटनाएँ निम्नलिखित हैं-

जीव विज्ञान

जड़ पदार्थों से रसायनशाला में जीव निर्माण में भी सफलता मिली है। गोस्वामी तुलसीदास जी ने लिखा है-

"जो चेतन कहँ जड़ करइ जड़हि करइ चौतन्य ।

अस समर्थ रघुनायकहि भजहिं जीव ते धन्य । 17

जो चेतन को जड़ कर देता है और जड़ को चेतन कर देता है, ऐसे समर्थ श्री रघुनाथ जी को जो जीव भजते हैं, वे धन्य है।

आज इसी श्रीराम का अंश मानव विज्ञान की सहायता से जड़ को चौतन्य करने का अथक प्रयास कर रहा है ।

आकाशवाणी

शिष्य और गुरु के संवाद है-शिष्य कहता है कि एक दिन मैं शिवजी के मन्दिर में शिवनाम जप रहा था। उसी समय गुरुजी वहाँ आये, पर अभिमान के मारे मैंने उठकर उनको प्रणाम नहीं किया। गुरुजी दयालु थे, (मेरा दोष देखकर भी) उन्होंने कुछ नहीं कहा : उनके हृदय में लेशमात्र भी क्रोध नहीं हुआ। पर गुरु का अपमान बहुत बड़ा पाप है अतः महादेवजी उसे नहीं सह सके।

आकाशवाणी हुई-

मंदिर माझ भई नभबानी। रे हतभाग्य अग्य अभिमानी ।

जद्यपि तव गुरु के नहि क्रोधा । अति कृपाल चित सम्यक बोधा ।। 518

निष्कर्ष : 'रामचरितमानस' में वर्णित घटनाओं में वैज्ञानिकता केबारे में अध्याय चार में रामचरितमानसश् के सातों काण्डों की वैज्ञानिकता का प्रमाण मिलता है जैसे- बालकाण्ड में- आकाशवाणी, पुत्रेष्ठि यज्ञ, अहिल्या का पत्थर हो जाना, रामजन्म और ज्योतिषशास्त्र। अयोध्याकाण्ड में जलवाणी, मनोवैज्ञानिक गुरू वशिष्ठ, मृतक के शव को सुरक्षित रखना और आकाशवाणी, अरण्यकाण्ड में जयन्त की कुटिलता और राम का ब्रह्मास्त्र, अस्त्र-शस्त्र, सीता का अग्नि में रक्षा कवच, किष्किन्धाकाण्ड में- रूप बदलना, आकाशमार्ग, सुग्रीव को राज्य दिलवाना आदि। सुन्दरकाण्ड में छायाग्रहिणी पद्धति (राडार पद्धति), रूप बदलना, रामसेतु का निर्माण, वास्तुकला और शिल्पशास्त्र, अखाड़ा अभ्यास, व्यायाम शालाएँ, पर्यावरण विज्ञान, लंकाकाण्ड में- चिकित्सा विज्ञान और पुष्पक विज्ञान एवं उत्तरकाण्ड में जीव विज्ञान और आकाशवाणी को उल्लेख प्रमुखतः मिलता है।

हम कह सकते है कि आज विज्ञान ने जो कुछ मानव को समृद्धत्तम राष्ट्रों के समाज को दिया है रावण ने उसे प्रभूतमात्र में प्राप्त कर लिया था। इस का प्रमाण हमें मानस के उपर्युक्त उदाहरणों के अतिरिक्त भी कई स्थलों पर मिलता है। आज भी हमारा औषधि विज्ञान एवं कार्य चिकित्सा जीवन को सदैव बनाए रखने के उपाय खोजने में व्यस्त है ।

संदर्भ

1. श्रीरामचरितमानस, सचित्र, सटीक-मोटा टाइप, गीता प्रेस गोरखपुर, बालकाण्ड, दोहा - 73, चौपाई 4, दोहा-74, पृष्ठ क्रमांक 90-91

2. वही, दोहा 186, चौपाई 1, पृष्ठ क्रमांक 188

3. वही, दोहा 188, चौपाई 4, पृष्ठ क्रमांक 190

4. वही, दोहा 189, चौपाई 1,2, पृष्ठ क्रमांक 190

5. वही, दोहा 190, चौपाई 1, पृष्ठ क्रमांक 191

6. वही, अयोध्याकांड, दोहा 156, पृष्ठ क्रमांक 473

7. वही, अयोध्याकांड, दोहा 156, चौपाई 1, पृष्ठ क्रमांक 473

8. वही, अरण्यकांड, सोरठा 1, चौपाई 3, पृष्ठ क्रमांक 620

9. वही, अरण्यकांड, दोहा 1, चौपाई 1, पृष्ठ क्रमांक 621

10. वही, अरण्यकांड, दोहा 28, पृष्ठ क्रमांक 658

11. वही, सुंदरकांड, दोहा 2, चौपाई 1,2, पृष्ठ क्रमांक 716

12. वही, सुंदरकांड, दोहा 3, चौपाई 1, पृष्ठ क्रमांक 718

13. वही, सुंदरकांड, दोहा 1, चौपाई 4, पृष्ठ क्रमांक 715

14. वही, सुंदरकांड, दोहा 59, चौपाई 1, पृष्ठ क्रमांक 768

15. वही, लंकाकांड, दोहा 53, चौपाई 4, दोहा 54, चौपाई 4, दोहा 55, दोहा 118, चौपाई 1, पृष्ठ क्रमांक 768

16. वही, लंकाकांड, दोहा 118(ग), चौपाई 2,3, पृष्ठ क्रमांक 899

17. वही, उत्तरकांड, दोहा 119 (ख), पृष्ठ क्रमांक 1030

18. वही, उत्तरकांड, दोहा 119 (ख), पृष्ठ क्रमांक 1030